गणतंत्र

राजेन्द्र चंद्रकांत राय

राजेन्द्र चंद्रकांत राय। जन्म : 1953। पहली कहानी सारिका में प्रकाशित। कहानी संग्रह : बेगम बिन बादशाह। उपन्यास : कामकंडला। पर्यावरण में गहन रुचि, इस विषय पर दस पुस्तकें।

उस रात की आखिरी बारात में अपनी घोड़ी को नचाने के बाद रमजान थक हार कर लौटा था। उसने अपनी घोड़ी का नाम बड़े प्यार से दुल्लो रखा था। दुल्लो उससे भी ज्यादा थकी हुई थी। रमजान ने उसे थान पर बांधा और खुद घुटनों के दर्द से चिलकता हुआ, कमर को दोनों हाथों से पकड़े हुए ओहउफ्फ करता करता सहन में घुसा। थकान और दर्द उसे तोड़े डाल रहे थे, मगर थकान और दर्द को तोड़ने का इंतजाम उसके पास था। दारू का अद्धा। शादियों के मौसम में कई कई रातों तक ऐसे ही थका डालने वाला सिलसिला चला करता। पर बरसात के दिनों में शादियों का दौर खत्म हो जाता, तब महीना महीना घर पर ही बेरोजगार पड़े रहने की नौबत आ पड़ती। सीजन के समय कमाये गये रुपये धीरे धीरे खत्म होने लगते और फिर ऐसा समय भी आता कि उसके लिए रोटियों और दुल्लो के लिए चारे के लाले पड़ जाते। हालांकि कुल दो ही प्राणी थे, फिर भी गरीबी थी कि भगाये न भगती। जब तक अम्मीं जान जिन्दा रहीं – रोती झींकती रहीं कि निकाह पढ़वा ले रे रमजनवा...मेरे इंतकाल के बाद रोटी पानी कौन करेगा रे...? पर, गरीबी और दूसरों की बारात में घोड़ी नचाने से ही रमजान को कभी इतनी फुरसत नहीं मिली कि वह निकाह के बारे में सोच सके।

रमजान ने अम्मीं के रोने धोने पर कभी कान नहीं दिये। तीन जनों को तो रोटी पूजती नहीं, फिर चौथे की समाई कहां से होगी? अम्मीं गरीबी और बीमारी के हाथों हलाक् हो गयीं। बीमारी ने जितना अम्मीं को लीला था, उससे कहीं ज्यादा रमजान को लील गयी थी। वह कर्जदार हो गया था। घोड़ी सूख कर कांटा हुई जा रही थी और उसके शरीर से भी गोश्त घटता जा रहा था। अम्मी के न रहने पर रमजान की घरेलू दिक्कतों में इजाफा भी हुआ। हफ्तों चूल्हा न जलता और महीनों दुल्लो का खरहरा पानी न होता। ठंड के दिनों में जो चनाज्वार भूसे में मिला कर खिलाना जरूरी होता है, वह भी न कर पाता। कभी दुल्लो खाती और वह फाके करता और कभी वह खाता और दुल्लो थान पर बंधे बंधे पांव फटकार फटकार कर मच्छरों से लड़ती हुई रात गुजार देती।

इस दुनिया में रमजान की आईद रमजान के पाक महीने में हुई थी, इसलिए बड़े लाड़ से नाम रखा गया था– रमजान। शायद इसीलिए इतने सालों से रमजान का महीना उसके लिए तसल्लीबख्श बना रहा है। रोजे फाकों को मजहबी सुकून अता कर देते और इन दिनों दुल्लो को दोनों वक्त हरा चारा मिल जाया करता।

शादियों के मौसम में दोनों की चांदी रहती। शादियां खाना भी दिलातीं और मेहनताना भी। कभी ऐसे अमीर उमरा भी मिल जाते कि ईनाम इकराम ऊपर से मिल जाता। तब रमजान अपने लिए सींक

www.tadbhav.com

कबाब और पाव खरीदता और दुल्लो के चारे में मिलाने के लिए गुड़ चना। दोनों की दावत उड़ती।

वह पूछता— क्यों दुल्लो मजा आया न... अरे काबुली चना था और अंकापल्ली गुड़... पेट भरके खाना... कल फिर नाचना है। दुल्लो जोरों से गर्दन हिला कर समर्थन करती।

—हां हां मेरी क्या पूछती है... मैं भी मजे मेंई हूं... नजीरे के होटल का सींक कबाब है... पाव के साथ खाने में मजा आ जाता है...

रमजान देसी दारू का एक अद्धा बारात लगने के पहले गटक चुका था और दूसरा अद्धा दूल्हे के भाई से मांग कर बचा कर रख लाया था, कि रोटी पानी के साथ छानेगा। अब उसे भी हलक में उड़ेल कर लेटा हुआ था। वह भी बेफिक्र होकर बैठ गयी थी कि चलो मालिक को चैन और रोटी दोनों इन दिनों मयस्सर हैं। वह मन ही मन दुआ मांगने लगी कि उसका मालिक रोज भरपेट रोटियां पाये। उसके चारे में थोड़ी कमी पड़ जाये तो पड़ जाये, पर मालिक खुश रहे। बचपन से दोनों का संग साथ है। समझ लो दोस्ती यारी ही है। एक दूसरे के साथ खेलने खाने में ही ज्यादातर वक्त गुजरा है।

आधी रात का समय रहा होगा कि एक बेअदब पुलिसवाला लाठी से धरती को बजाता और चिल्लाता हुआ आया— अरे... यां पे कोई घोड़ीवाला रैता है क्या...?

दुल्लो की आंख पहले खुली। वह हैरत में पड़ गयी कि इतना बेशऊर आदमी कौन आ टपका... इसकी बारात में तो मैं ना नाचूंगी...और जो रमजान नचाने ले ही गया तो इसे एक दुलत्ती तो झाड़ ही दूंगी...?

वह बेसबरा फिर चिल्लाया— घोड़ीवाला... अए घोड़ी वाला... साल्ला किदर मर गया...?

फिर उसकी निगाह दुल्लो घोड़ी पर पड़ी तो उसे राहत महसूस हुई— हूं... घोड़ी तो है... तो यां घोड़ीवाला भी होग्गा...

उसने अंधेरे में आंखें फाड़ कर देखीं साफ साफ कुछ न दिखा। वह घर के सहन की ओर बढ़ा कि उसका पैर फच्च से कच्ची नाली में पडा़ और दुल्लो की लीद मूत का कीच उसके पैण्ट के ऊपर तक उछला। पुलिसवाला गुस्सा गया – साले मुसल्ले, न रैने का ढंग न खाने का ढंग... थू थू... कां नाली में पांव घुस ग्या...? दुल्लो का जी हुआ कि ठठा कर हंसे – वह अंदर अंदर हंसी भी। तब तक पुलिस वाला रमजान की खाट तक पहुंच गया था। पाटी पर डंडा पटक कर बोला – ऐई घोड़ीवाला... उट्ठ... साला दारू पीकर सो ग्या क्या...? उठ्ठ बे घोड़ी के...

रमजान को होश कहां, एक तो थकान, दूसरे पेट भर खाना और तीसरे दारू का नशा... पुलिस वाले ने लाठी से टहोका दिया— मर ग्या क्या ब्बे...?

– कौन है बे...? रमजान हड़बड़ा कर उठा।

– मैं हूं तेरा बाप्प... उठ साल्ले... ऐसा सो रहा है जैसे कप्तान हो...

रमजान ने आंखें मलीं, खोलीं, शादी बारात वाला कोई गिराहक न लगा। फिर आंखें मलीं – सलाम साब... वह उठ कर बैठ गया।

– क्या नाम है बे तेरा...?

– रमजान है, हुजूर...।

– घोड़ीवाला है...?

– हां, हुजूर... इसे ही शादी में नचा कर पेट पालता हूं... कोई बरात में जाना है क्या हुजूर...? अब्भी के अब्भी चलना हो तो...

– कल लश्कर थाने आ जाइयो बड़े साब ने बुलाया है...।

रमजान डर गया— कोई गल्ती होग्गई हुजूर...?

– अरे नईंब्बे... बस तू आ जाईयो... नई तो साल्ले... पुलिस वाले ने डंडा दिखाया।

www.tadbhav.com

दुल्लो को बहुत बुरा लगा। वह उठ कर खड़ी हो गयी और पूंछ फटकारने लगी।

— अब मैं चल्ता हूं... सबेरे दस बजे तक... लश्कर थाने... क्या...?

— आ जाउंगा हुजूर...

पुलिसवाला लाठी बजाता चला गया। दुल्लो ने दुलत्ती झाड़ी पर पुलिस वाले तक न पहुंची। रमजान की नींद उड़ गयी। नशा हिरन हो गया। सींक कबाब पेट में गड़ने लगे। जाने क्या हो गया? फिर उसने अपने को समझाया — कुछ हुआ होता तो वह अभी ही बांध कर ले जाता। कहीं शादी वादी होगी। घोड़ी नचवानी होगी मुफ्त में, इसीलिए साल्ला इत्ता रंग दिखा रहा था।

दुल्लो बेचैन दिखी...

— अरी सोज्जा दुल्लो... फिकर की कोई बात नईं... पुलिसवाला था... अब पुलिस वाले तो होत्तेई ऐसे हैं न... सीधे मूं बात करना इन्को न आवै है... सोज्जा... कहीं नाच्ना वाच्ना होगा कल्ल... वह भी खाट पर लेट गया और अपने को सुलाने की कोशिश करने लगा।

सुबह दस बजने के कुछ पहले ही रमजान लश्कर थाने पहुंचा। अंदर जाने की हिम्मत जुटाने के लिये उसने बाहर सड़क पर ही एक दो फेरे मारे। सामने के टपरे पर चाय पीकर ताकत संजोयी और सुस्त कदमों से थाने में प्रवेश कर गया। मैदान पार कर दालान तक पहुंच जाने पर भी किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। रमजान कल वाले पुलिसवाले को नजरों ही नजरों में तलाशने लगा, लेकिन वह कहीं दिखायी नहीं दिया। उसने सोचा अंधेरे में ठीक से देखा भी तो न था। फिर खुद ही एक पुलिस वाले के पास जाकर बोला— सलाम साब...

पुलिसवाले ने उसे घूरा।

— मैं घोड़ीवाला हूं हुजूर... थाने में बुलाहट हुई थी... शायद...

पुलिसवाला गुर्राया — घोड़ीवाला है...?

— हां हुजूर...।

— इधर आ... बड़े साहब के पास...

दोनों टीआई के कमरे में पहुंचे। रमजान ने फिर सलाम किया पर उसे जवाब नहीं मिला। पुलिस वाले ने बताया — घोड़ीवाला है साब्ब...

टीआई ने उसकी ओर देखा — कित्ती घोड़ी हैं बे तेरे पास?

— एकई है हुजूर...

— हूं और घोड़ी वालों को जान्ता है...?

— जान्ता हूं साहब जी... तीन चार तो मेरेई आस्पास हैं...

टीआई ने कुर्सी पर पहलू बदला — उनको भी ले आना। तुम लोगों को मंडे को दिल्ली जाना है घोड़ों घोड़ियों के साथ...

— कोई बरात जायेग्गी हुजूर...?

टीआई हंसा— हां, देश की बरात निकलेगी... अबे गणतंत्र दिवस पर निकलने वाले जुलूस में जाना है। खूब रुपये मिलेंगे... खानापीना अलग से... समझा...?

— समझ गया हुजूर...

वह जल्दी से बाहर आ गया। तभी उसे कल रात वाला पुलिसवाला दिखा — सलाम हुजूर... मैं घोड़ी वाला रमजान हूं, साहब... कल्ल आप्प गय्ये थे न्...

www.tadbhav.com

— आ ग्या तू...?

— हां, साहब से भी मुलाकात हो गयी हुजूर...।

— सब समझ ग्या तू...? सोम्मवार को ट्रक जायेगा थाने से... उसी में घोड़ी लेकर जान्ना है... शाम से पहले आ जाईयो... क्या...?

— आ जायेंगे मालिक... मगर एक बात्त पूछनी है हुजूर...।

— पूंच्छ

— गनतंतर दिवस क्या होता है..?

— पुलिसवाले ने सिर खुजलाया अब्बे अब होत्ता है, तो होत्ता है... तू तो आ जाना बस्स... ज्यादा पूंछतांछ मत्त कर्र...

— जी साब...

लश्कर थाने में तीन ट्रकों में एक हाथी, एक ऊंट और आठ दस घोड़े घोड़ियां मय उनके मालिकों के ठूंस दिये गये। एक पुलिसवाला भी ड्राइवर के बाजू वाली सीट पर बैठ गया। उसे ही रास्ते में खाने पीने का इंतजाम करना था और दिल्ली में पार्लियामेण्ट स्ट्रीट थाने के हवाले करके लौट आना था। इन्हें वापस भेजने न भेजने की जिम्मेदारी पार्लियामेण्ट स्ट्रीट थाने की थी।

ग्वालियर से चले तो आगरे में ट्रक रुका। आगरे में पुलिस वालों ने ढाबे में खाना खिलाया। उसने मटन दारू की छूट भी दे दी और खुद खाने पीने में जुट गया। रोटियां देख कर रमजान को दुल्लो का खयाल आया तो वह उठ कर ट्रक तक गया, ट्रक तिरपाल से बंद था। अंदर घास पत्ते डाल दिये गये थे, लेकिन दुल्लो ने उन्हें मुंह तक न लगाया था। दुल्लो के आगे उसने दो रोटियां डाल दीं — ले खाल्ले दुल्लो... दिल्ली जा रए हैं... देस की राज्धानी है... घूमने में मज्जा आयेग्गा... दुल्लो ने नाराजी से दूसरी तरफ सिर घुमा लिया। वह लौट आया, पर उससे खाया न गया।

रात भर ट्रक हिल हिल कर सफर तय करता रहा। हाथी और ऊंट जबरन बैठा दिये गये थे, पर घोड़े बैठने को तैयार ही न थे। वे बार बार गिरने को होते मगर संभल जाते, पर यह संभलना भी देर तक न चला। एक जबरदस्त झटका लगा और घोड़े धम्म से गिर पड़े। गिरे तो फिर उनकी उठने की हिम्मत न पड़ी। घोड़ेवाला बोला — हड्डी वुड्डी न टूट गयी हो...

ट्रक जब पार्लियामेण्ट स्ट्रीट थाना पहुंचा तो फजर की नमाज के लिए मस्जिदों से अजान हो रही थी। थाने के आहाते में और भी ट्रक खड़े थे। एक हवलदार ने ट्रक से उतरे पुलिसवाले से कहा — इन लोगों को पीछे बैरकों में भेज्ज दे भाई और तू इधर आज्जा — थाने में।

तिरपाल हटायी गयी। ट्रक का पल्ला खोला गया। जानवरों की लीद मूत्र और चारे की बास बाहर निकली। ड्राइवर ने नाक बंद कर ली। जानवरों के मालिक थके हारे से धीरे धीरे उतरे फिर जानवरों को उतारने के लिए ट्रक एक चबूतरे से लगाया गया। लस्त पस्त घोड़े, ऊंट और हाथी उतरे। एक घोड़े की हड्डी टूट गयी थी। वह बैठा रहा। जब उसे हाथ लगा कर उठाया गया तो वह खड़ा होते होते फिर लद्द से अपनी जगह पर गिर गया। घोड़े का मालिक व्याकुल हो गया। उसकी आवाज में रुलाई भी मिल गयी। लश्कर से आये पुलिसवाले ने पूछा— क्या हुआ रे...?

रमजान जो दुल्लो के साथ सन्न खड़ा था, धीरे से बोला — घोड़े के पैर की हड्डी टूट गयी... टिरक के हचके से गिर पड़ा था...

पुलिसवाला चुप रहा। किसी तरह से दो तीन लोगों ने घोड़े को नीचे उतारा और चबूतरे पर बैठा दिया। घोड़ा दर्द को आंखों में भरे हुए, गरदन लम्बी करके पड़ गया। पुलिसवाला थाने में चला गया, और घोड़ेवाले, घोड़े के पैर की हड्डी जोड़ने वाली देसी दवाईयों की तलाश में जुट गये।

लश्कर से आये पुलिस वालों ने उस पुलिसवाले से पूछा — क्या दिल्ली में जानवरों का

www.tadbhav.com

अक्काल पड़ गया है जो ग्वालियर से मंगाना पड़ा...?

— ऐसेई समझ भाई तू तो... हमें अब ज्यादे कुच्छ पत्ता नईं है... हमें तो हुकुम आया था कि इद्धर बाहर से जान्वर वान्वर आवेंगे... उनका ठौर ठिकाना करना होगा... बस्स।

— हड्डी चटक गयी साल्ली... रात भर ट्रक में बैठ्ठे बैठ्ठे...

— सो जा... घंटा दो घंटा... उठ्ठेगा तो चाय चुई पिलावेंगे... आराम कर ले।

लश्कर थाने से आया पुलिसवाला कांखता कराहता बेन्च पर पड़ गया।

थाने के पीछे की बैरक के सामने वाले मैदान में राजस्थान, पंजाब, यू.पी. से आये हुए और भी जानवर रखे गये थे। उनके महावत और देखभाल करने वाले भी आसपास के कमरों में डेरा जमाये हुए थे। चारा पानी इतना उपलब्ध नहीं कराया गया था कि वह पूरा पड़े। जो जुट गया था, उसे ही जानवरों के आगे डाल कर हाथ झाड़ लिये गये थे। थाने के बजट से ही सब करना था। अब थाने का बजट थाने को ही नहीं पूजता, तब ऐसे सिर आ पड़े खर्चों के लिये तो एक ही तरीका है, अरे वही पुलसिया तरीका। सरकार भी जानती है कि थाने वाले कुछ न कुछ जरिया खोज ही लेंगे। थाने वालों ने भी बिना ना नुकुर किये 'यसस्सर यसस्सर' कह कर जिम्मा ले लिया था, और अपनी तरफ से चारे पानी का इंतजाम कर ही दिया था। ये अलग बात है कि हाथी, घोड़ों, ऊंटों की रुचि और जरूरत जाने बिना जो घास पत्ती हाथ लगी, डाल दी गयी थी।

हाथियों के महावत पानी की कमी से परेशान थे। हाथियों को पीने के लिये भरपूर पानी की आवश्यकता होती है और मल मल कर नहलाना इससे भी ज्यादा जरूरी होता है। पानी की कमी के कारण हाथी बेहाल थे और महावत भी बेचैनी का अनुभव कर रहे थे। बाजार में उपलब्ध गाय भैंसों का चारा लाकर डाल दिया गया था। महावतों ने थाना परिसर के वृक्षों से कुछ डालियां वगैरह तोड़ीं, पर थानेदार ने मना करवा दिया कि थाने के पेड़ों की शोभा न बिगाड़ी जाये।

मामला सरकार और पुलिस वालों का था, इसलिए महावतगण नाराजगी जाहिर नहीं कर पा रहे थे, पर उन्हें यह डर भी था कि यदि हाथी और ऊंट भड़क गये तो बड़ी मुश्किल होगी। यह बात उन्होंने पुलिस वालों को भी बता दी थी। पुलिस वालों ने तब उल्टा उन्हें ही धौंस दी कि जानवरों पर नजर रखना, कुछ ऐसा वैसा हुआ बच्चू तो खैर नहीं।

24 जनवरी की रात में ही गणतंत्र दिवस समारोह वालों ने पार्लियामेण्ट स्ट्रीट थाने से सभी जानवरों और उनके मालिक महावतों को बुलवा लिया था। सेना और विशेष पुलिस बल को हाथी, घोड़े, ऊंट, कुत्ते पालने का अनुभव है। उनके आवास, भोजन और आदतों की जानकारी वाले विशेषज्ञ भी उनके पास हैं। रमजान यह देख कर हैरत में पड़ गया कि सरकार के पास क्या तो घोड़े हैं और क्या तो हाथी। ऊंचे पूरे चिकने शरीर वाले मोटे ताजे और चुस्त घोड़ों को वह आंखें फाड़े देखता रह गया।

रमजान ने साथी महावत से कहा — भाईजान... इन्के घोड़े देख्खो क्या शानदार हैं...?

— सरकारी हाथी घोड़े हैं... टैम्म में खाते हैं... टैम्म में सोते हैं... टैम्म से काम पर निकलते हैं। टैम्म से हगते मूतते भी होंग्गे... वह अपनी ही बात पर हंसने लगा।

रमजान का अचरज छोटा न हुआ था — खिलात्ते क्या होंगे?

— अरे रमजान मियां... इन सरकारी जानवरों को खाने की क्या कमी... जो चाहे सो खात्ते होंगे...

उधर का एक अफसर आया और इन लोगों को फटकार लगा गया— खड़े खड़े मुंह क्या देखते हो, चलो मैदान के बाकी हिस्सों में तुम लोग भी रिहर्सल कराओ अपने जानवरों को...?

रमजान ने डरते डरते पूछा— रिसल क्या जी...?

www.tadbhav.com

वह गुस्सा हो गया – न जाने कहां कहां से पकड़ लाते हैं...? अब इन्हें रिहर्सल का मतलब भी नहीं पता... अरे जैसे हम जानवरों को रिहर्सल करा रहे हैं, वैसे तुम भी कराओ...

– वैसे... महावत चिन्तित हुआ – ऐसे तो हमारे जानवर न कर सकते जी... वो तो परेड कर रहे लागे हैं, हमको...

– हां ये परेड कर रहे हैं...। तुम लोग अपने जानवरों से क्या कराते हो...?

– हम तो नचाते हैं जी...

– तो नचाओ... हम भी देखें, कैसे नाचते हैं तुम्हारे जानवर...?

– अब्ब शादी ब्याव मेंई नाचते हैं... जैसा भी...

– दिखाओ तो...

रमजान और महावत ने अपने दीगर साथियों को साहब का हुकुम बता दिया। सारे लोग अपने अपने जानवरों को लेकर मरी हुई सी चाल में मैदान के दूसरे किनारे पर जुट गये और अपने अपने तरीके से उन्हें चलाने, बिठाने, नचाने लगे। हाथियों, घोड़ों और ऊंटों ने अधपेट खाना खाया था और नाचने कूदने का उनका बिल्कुल मन न था। वे सब बेमन से हिलते डुलते से चले और अपने अपने मालिकों के इशारे पर मरी मरी सी गति के साथ निर्देशों का पालन करने लगे। दूर खड़ा हुआ अफसर कुछ देर तक देखता रहा फिर उनके करीब आकर बोला – यही कराआगे गणतंत्र परेड के जुलूस में...?

वे अपराधियों की तरह डरे हुए खड़े रह गये। उनमें से एक बोला – हमें तो जी कुच्छ भी न मालुम है... हमें पुलिस वालों ने पकड़ा, हमारे जानवरों को टिरक में ठूंसा और इधर ले आये जी...! इन बेजुबानों ने तो कुछ खाया तक ना है, दो दिन से...!

वह अपने आंसू पोंछने लगा। अफसर को विचित्र सा लगा।

– जानवरों ने खाया नहीं...?

– जी सरकार...।

– अच्छा अच्छा और तुम लोगों ने...?

रमजान ने कहा – जब जानवर ही न खायेगा हुजूर तो हमसे कैसे खाया जायेगा... और फिर उन थाने वालों को तो ड्यूटी बजाना थी... सो...? उससे आगे कुछ न कहा गया।

– अच्छा अच्छा... कोई बात नहीं... अब तुम लोगों को अपने जानवरों के साथ इदर ही रहने का। जाओ अपने जानवरों को लेकर उदर ही बैठो। जब रिहर्सल खत्म हो जायेगी तब हमारे साथ चलना...

वे सब फिर रेंगते हुए पुरानी जगह पर आ खड़े हुए। अफसर उधर को चला गया। उनके हाथी, घोड़े ताजादम थे। सिर उठा कर मजबूती से दौड़ते और निर्देशों का पालन कर रहे थे। घोड़ों पर वर्दीधारी सैनिक तन कर बैठे थे। वे कभी घोड़ों को चार की पंक्ति में चलाते कभी आठ की और कभी अचानक दो की पंक्ति बन जाती। कभी घोड़े दौड़ने लगते और कभी आराम से चलते, मगर उनकी कतार न टूटती। देखते रहने को जी करता था। उनके सामने दुलदुल घोड़ी की क्या बिसात? शादी बारात में थोड़ा आगे के पैरों पर, थोड़ा पीछे के पैरों पर ठुमक लेती थी तो बारात वाले जोश में आ जाते थे। फिर क्या नाच गम्मत होती कि... रमजान आंखें फाड़े देख रहा था और सोच रहा था।

बड़ी फज्र से आठ बजे तक रिहर्सल चली। रिहर्सल खत्म हो जाने पर दो सैनिक इन लोगों के पास आये और मैदान के दूसरे सिरे पर गड़े हुए टेन्टों में जानवरों को ले जाने और उन्हें खिलाने पिलाने को कहा। वे अपने जानवरों को मैदान के दूसरे सिरे वाले टेन्ट में ले जा रहे थे। उन सैनिकों ने कहा – वहीं जानवरों के साईस महावतों के लिये भी नाश्ता चाय मौजूद है। हां, यह ध्यान रखना, तुम और तुम्हारे जानवर उधर हमारे टेन्टों की तरफ न आने पावें।

रमजान और उसके साथी अपने जानवरों को लेकर टेण्ट में गये। टेण्ट में जानवरों के खाने पीने के हौज और जरूरत के अनुसार दाना पानी मौजूद था। घोड़ों के लिये जई और सूखी घास थी,

www.tadbhav.com

जिसमें चने को पीस कर मिलाया गया था। अलग से आटे का चोकर और भूसा भी मौजूद था। यह भोजन न दुलदुल घोड़ी ने पहले कभी चखा था और न ही दूसरे घोड़ों ने। ऐसे घोड़े उत्तम और स्वादपूर्ण भोजन का लुत्फ उठाने में जुट गये।

हाथियों के लिए पीपल, अंजीर, कटहल और बरगद की शाखाएं मौजूद थीं। महावत लोग खुश हो गये। हाथियों को पसंद आने वाला मनभावन भोजन यही था। हाथियों ने पत्तों की गंध पायी तो खुद ही खिंचे हुए उसी तरफ चले गये। शाखाएं दो दो, तीन तीन फुट के टुकड़ों में पहले से काट कर रखी गयीं थीं। सूखी टहनियों और शाखाओं के चुभने गड़ने वाले भागों को सतर्कता से अलग कर लिया गया था, ताकि हाथियों के मुंह या मसूढ़ों में जख्म आने की सम्भावना न रहे। असल में हाथियों को दिन भर कुछ न कुछ खाने को मिलते रहना चाहिए। इस तरह दिन भर में वे एक क्विंटल तक भोजन सामग्री खा जाते हैं।

हालांकि ऊंटों को कई दिनों तक भूखे प्यासे रहने की आदत होती है, परंतु इसकी भी एक सीमा है। असल में ऊंट की कूबड़ ही उनका आपात्कालीन भोजन भंडारगृह होता है। उनकी कूबड़ में फैट वाले ऊतक होते हैं और जब भोजन नहीं मिलता तो वे इसी से अपना काम चलाते हैं। अरबी ऊंट के पास एक कूबड़ होती है और बैक्टीरियन ऊंटों में दो कूबड़ पायी जाती हैं। अपने यहां अरबी नस्ल के ही ऊंट पाये जाते हैं। ऊंटों के लिये भी पत्ते और टहनियां थीं। टहनियों के अलावा लम्बी, ताजी और गूदेदार घास ने ऊंटों की भूख प्यास और बढ़ा दी थी। ऊंट कितने आनंदित हुए यह तो दिखायी नहीं दिया, लेकिन ऊंटों के मालिक निहाल हो गये। गोया घास टहनियां उन्हीं के लिये लायी गयी हों। ऊंटों को अस्सी से सौ लीटर पानी की रोज जरूरत होती है। सो उसकी भी यहां कोई कमी न थी।

जब हाथी, घोड़े, ऊंट अपने अपने भोजन स्थलों पर मनमाफिक भोजन उड़ाने में जुटे हुए थे, तब महावतों, साईसों और ऊंटवालों का झुंड दूर खड़ा होकर उन्हें ऐसी वात्सल्यपूर्ण नजरों से देख रहा था, जैसे मां बाप थके हारे बच्चों को भोजन कराते समय देखते हैं। रमजान की आंखों में तो आंसू ही ढुलक आये। उसने घोड़ी की पीठ थपथपायी और कहा – दुलदुल रानी, सफर में थोड़ा दिक्कत जरूर हुई और दो दिन फाके में भी गुजारने पड़े मगर अब जो दाना मिला वो तो मैं भी तुझे कभी नहीं खिला सका खाले, मगर ख्याल रखियो... अफरा न लगा लीजो...

इसी समय सात आठ जवान एक हाथ ठेले में बड़े बड़े गंजे और देगचियां रखे हुए उधर आये। ठेले में रकाबियां, कटोरियां और चम्मचें भी मौजूद थीं अनुशासनबद्ध तरीके से उन्होंने ठेला उनके करीब खड़ा किया और कहा – ये तुम लोगों का नाश्ता है फिर वे चले गये।

गंजों और देगचियों से उठती सुगंध ने उनके नथुने फड़फड़ा दिये। महावत ने एक गंजे का ढंकना हटाया, उसमें उबले हुए चने थे। दूसरे में उबले अंडे, तीसरे में आमलेट, चौथे में दलिया, देगची में चाय और दूध था।

– वाह वाह... कित्ती भली है सरकार... क्या उम्दा नाश्ता भेजा है! ऊंटवाला खुश होता हुआ बोला।

– ऐसा नाश्ता तो कभी नसीब ही नहीं हुआ। महावत...

– हुजूर... तकदीरें इसी तरह जागा करती हैं। रमजान...

जानवरों की तरह वे भी भूखे और पस्तहाल थे, मगर नाश्ते ने उनकी रौनकें लौटा दी थीं। वे जीभ में ढेर सारा गीलापन महसूस करते हुए नाश्ते पर टूट पड़े। नाश्ते में भेजी हर चीज उन्होंने खायी और ठेले पर खाली गंजों पतीलों का ढेर लगा दिया।

बाद में जब सेना का रसोईदार और उसके सहायक ठेला वापस लेने आये तो रमजान उनका शुक्रिया अदा करना नहीं भूला। उन लोगों ने इनके शुक्रिया की बहुत अधिक परवाह नहीं की।

उनमें से एक ने जाते जाते इतना और कहा कि जानवरों के बाजू वाला टेण्ट उन लोगों

www.tadbhav.com

के लिये है। वे वहां आराम करें और अपने जानवरों पर निगाह रखें। दोपहर का खाना भिजवा दिया जायेगा। उनके टेण्ट में भी बेहतर किस्म की व्यवस्थाएं थीं। एक बड़ी दरी सबसे नीचे बिछी हुई थी, फिर उस पर खोल भरे गद्‌दे, रजाइयां और तकिये भी थे। पीने का पानी और गिलासें भी थीं। वे तृप्त और लापरवाह हो चुके थे। अब मस्ती आ रही थी। वे एक दूसरे के साथ मजाक करने और छेड़छाड़ करने की इच्छा से लबरेज हो रहे थे। शुरुआत रमजान ने ही की– ससुराल वाली खातिर हो रही है आज तो...

– मियां तुम्हारी ससुराल कहां की है...? महावत ने पूछा...

रमजान उदास हो गया– ससुराल कहां है...? अभी तक निकाह ही कहां हुआ...?

– पर, उस दुलदुल हसीना को तो बहुत चाहते हो...

– जे तो है... वो भी मुझे चाहती है...

– तो उससे निकाह क्यों नहीं पढ़वा लेते...?

– निकाह ही समझो भाईजान... दुनिया में न कोई हमारा है और न कोई उसका... जिन्दगी एक दूसरे के सहारे ही बिताना है... पर यदि तुम लोगों को हाथी या ऊंट से शादी करनी पड़े तो... सोच्च लो, क्या होयगा तुम्हारा...?

वे सब हंस पड़े। हंसने का मौसम उनकी जिन्दगी में बहुत कम आता था और अब जबकि वह आया हुआ था वे न हंसने वाली बातों पर भी हंसे जा रहे थे।

महावत ने कहा – जब टिरक पर चले थे तो लग रहा था किदर को ले जा रए हैं... जाने क्या करेंग्गे, हमारा?

– हां मैं तो बहुतई डरा हुआ था। ऊंटवाला बोला – सोचरा था... जेल में डाल देंगे... जभी इस तरह पकड़ाधकड़ी हो रई है...

– मगर भईया सरकार तो सरकारई होत्ती हैगी

– कैसा उम्दा इंतजाम किया है... चाहे जानवरों के लिये हो चाहे आदमियों के लिये हो... काए...?

– हर साल बुलाया करें तो हम खुदई चले आया करें... जे पुलिस और थाना की बीच में का जरूरत...?

– जे भी ठीक है...

– तो मौका मिलै अगर से, तो बड़े साब्ब से बात कर लेना मियां...

– हओ... कर लूंगा...

– उस पांव टूटे घोड़े का अब क्या हाल है...?

– हड़जोड़ पीस कर बांध दी है, मगर दस बारा दिन तो लग जायेंगे... धरती में पांव धरने कूं...

– सरकारी लोगों से कोई अंगरेजी दवा ले लो, मियां... जल्दी फैदा हो जायेगा, कहूं...

– हो...

दोपहर का भोजन भी जबरदस्त रहा। रोटियां, सब्जियां, चावल, मटन, और बिरयानी छक कर खाया और तान कर सोये। दिल्ली की ठंडी हवाएं फुरैरी न उठाने लगतीं तो अभी और न जाने कित्ता सोते। बारह चौदह आदमी बीस आदमियों का खाना डकार गये थे। सोने के अलावा न तो कोई काम था और न कोई चारा। जिसके घोड़े का पैर टूट गया था, वही उठा। मुंह हाथ में पानी मारा और घोड़े की दवाई करने गया। पट्टी खोली। हड़जोड़ के नये तने कूटे पीसे और हल्के हाथों से लगा दिया। घोड़ा अधलेटा

www.tadbhav.com

सा रहा आया। अच्छा दाना पानी मिल जाने से उसे पैर का दर्द पता न पड़ रहा था।

– येल्लो राजा मियां... दवाई लगादूदी है... दो दिण और आराम कर लोगे तो पांव दुरुस्त हो जायेगा...

घोड़ा बिना प्रतिक्रिया सुनता रहा।

– बादशाओं वाला खाणा पीणा चलरा है... खाओ और सोओ... क्या...? तकलीफ भी तो तेणे खूबई उठायी।

घोड़ा दर्द से चिलक उठा...

– धीरे धीरे तोई लगारा हूं न... कोई तेरा पांव दबारा हूं का... अब्ब हाड़ टूटेगा तो थोड़ा बोत दर्द तो होगाई ना... दांत दबा कर सहण कर ले...

उसने जई और चारा लाकर उसके मुंह के पास रख दिया – ले खाल्ले... ताकत आयेगी. ..

रात तीन बजे ही उन्हें जगा दिया गया कि जानवरों को नहला धुला कर घंटे भर में मैदान में हाजिर हों। टेण्ट में रात भर ठंडी हवा की सुरसरी नींद तोड़ती रही थी और इस वक्त अंधेरा तथा कोहरा दो मीटर दूर का भी कुछ देखने न देता था। पर वे उठे और काम में जुट गये। चार बजे वे सब अपने अपने जानवरों के साथ परेड वाली जगह पर पहुंच गये थे।

कल वाला अफसर आया तो उन सबने जल्दी से 'राम राम' और सलाम किया। अफसर हंसमुख था। मुस्करा कर बोला – खाना पीना ठीक से किया था...?

– किया था ज्जी...

– कोइ दिक्कत...?

– बिल्कुल नईं ज्जी...

– ठीक है। तुम लोग अपने जानवरों को जिस तरह नचाते कुदाते हो, उसी तरह यहां प्रेक्टिस करो... परेड में जानवर नाचते हुए चलेंगे... अलग से कुछ नहीं करना है। बाकी हमारा लोग का काम है। जवान लोग और उनका जानवर लोग परेड करेगा... तुमको चिन्ता करने का नईं... ठीक है?

– ठीक है साब्ब...

वह चला गया। ये लोग अपने तरीके से जानवरों को नचाने कुदाने का अभ्यास करने लगे। दुलदुल घोड़ी के नाच में और चमक आ गयी थी। उसने कुछ ज्यादा ही दिल लगा कर नाच दिखाया। दूसरे जानवर भी चुस्ती दिखा रहे थे। हाथियों ने बैठने, नमस्ते करने और माला पहनाने के करतब किये। माला नहीं थी तो बिना माला के हाथी ने माला पहनाने का काल्पनिक करतब किया। ऊंट नाचने और दौड़ने में मस्त रहे। महावत, साईस और ऊंटवाले ठंड में कुकड़ रहे थे मगर मुंह से भाप निकालते हुए अपने जानवरों से बतिया भी रहे थे। उन्हें निर्देश भी देते और निर्देश का पालन ठीक से होने पर शाबासी भी। मनुष्य की भाषा और संकेतों को जानवरों ने अपना लिया था और उन पर अमल करना भी उन्हें आता था। मालिकों को भी जानवरों की भाषा, दर्द और खुशियों का पता था।

अभ्यास के बाद अफसर ने सब लोगों की मीटिंग ली। वे सब मैदान में नीचे बिठा दिये गये थे। कुछ मझोले अफसर पीछे और गोल घेरे के इधर उधर खड़े थे। जो खड़े थे वे अपने हाथ पीछे बांधे हुए थे और तनी हुई मुद्रा में थे। बैठे हुए सैनिकों के बैठने का ढंग एक सा था और वे भी बिल्कुल चैतन्य थे, जैसे अभी उठ कर कहीं दौड़ लगानी हो। अफसर ने बोलना शुरू किया – जवानो! हमारे देश का त्रेसठवां गणतंत्र दिवस प्रोग्राम का दिन आ पहुंचा है। हमेशा की तरह राष्ट्रपति जी, प्रधानमंत्री जी, सेण्ट्रल मिनिस्टर्स, विदेशी राजदूत और दीगर इम्पार्टेण्ट हस्तियां वहां होंगी। दुनिया की सबसे बड़ी डेमोक्रेटिक कण्ट्री की जांबाज और मजबूत सेना को गणतंत्र परेड पेश करना है। शानदार सेना की

www.tadbhav.com

शानदार परेड। टीवी पर दुनिया भर में आपको देखा जायेगा... बढ़िया यूनीफार्म, चुस्त शरीर और बुलंद हौसलों से हम भारतीय ध्वज और राष्ट्रपति जी को सलामी पेश करेंगे। जरा सी भी चूक न हो। मुस्तैदी से अपनी ड्यूटी करना है। अंडरस्टैण्ड...?

समूह चिल्लाया— यस्स सर...

— एनी डाउट...?

— नोस्सर...

ये लोग चौंके... क्या कहा गया, कुछ भी न समझे

— आॅ. कॅ. डिस्पर्स दैन...

अफसर खट् खट् जूते बजाते चले गये और सैनिक तथा मझोले अफसर भी इत्मीनान से मैदान में बिखर गये। ये बैठे रहे फिर सबको उठता देख ये भी उठे। महावत ने रमजान को टहोका लगाया — अप्पन लोग क्या करेंगे..., जा पूछ तो...

रमजान उठ कर सैनिकों वाली चाल की नकल करता हुआ एक मझोले अफसर के आगे जा खड़ा हुआ — सलाम सर जी...

— सलाम...

— एक बात पूछनी थी सर जी...?

— पूछो...

— हम लोगों को जुलूस में कां रैना है और का करना है... कुछ बतायेंगे साब्बजी...?

अफसर मुस्कराया — तुम लोगों की पोजीशन बता दी जायेगी। तुम लोग सड़क पर चलते समय अपने जानवरों को डांस कराते हुए आगे बढ़ोगे...

— और साब्ब जी...?

— बस्स...? अभी तुम लोगों के कपड़े और जानवरों की सजावट का मटेरियल दे दिया जायेगा। सज सजा कर शामिल होना... हां ध्यान रखना तुम लोगों से और तुम्हारे जानवरों से कोई मिस्टेक न होने पाये।

— ठीक है सर जी...

इन लोगों में खलबली मच गयी। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के सामने से उन्हें गुजरना होगा। उनके दिल धड़ धड़ करने लगे। अपने जिले के मंत्री को तो वे कभी देख नहीं पाये, अब तकदीर ने ऐसा पलटा मारा कि खुद राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री उन्हें देखेंगे। उन्हें देखने जुटेंगी बड़ी बड़ी हस्तियां। दिल्ली के रास्तों के दोनों ओर लोगों का हुजूम खड़ा रहेगा। टी वी पर दिखाये जायेंगे वे और उनके जानवर।

एक महावत ने कहा — धन्न हैं हमारे जानवर... जिनके कारन हम लोगन को आज इतनी इज्जत मिलने बारी है...

रमजान ने सोचा— दुलदुल की बदौलत जे दिन नसीब हुआ। दुलदुल का कर्जा वह जनम भर भी चुकाना चाहे तो न चुकेगा...

ऊंटवाला अपनी आंखें नम कर बैठा — कहां तो लग्ता था कि ऊंट के साथ जिणगानी बिताना पड़ रई है फूटे भाग। मग्गर आज ऊंट ने आदमी बणा दिया। ना तो लोग मुझे भी ऊंट कहणे लगे थे...

कितने कीमती और कितने आलीशान कपड़े उन्हें मिले थे। उनकी तो आंखें फटी रह गयीं; दूल्हों को भी नहीं मिलते होंगे ऐसे कपड़े। रंगबिरंगे और चिकने चिकने। जानवरों के लिये भी इतने ही बढ़िया कपड़े, घुंघरू, घंटियां वगैरह दी गयीं थीं। प्रदेश के पहिरावे के हिसाब से कपड़े मिले थे। उन लोगों ने आधी रात से ही अपने जानवरों को सजाना शुरू कर दिया था। जानवरों के बाद खुद उन्हें भी

www.tadbhav.com

सजना था। बड़े अफसर का हुकुम था कि चार बजे सुबह सेना के ट्रक और लारियां आ जायेंगी। तब सब कुछ तैयार रहना चाहिए। जरा भी देर न हो। जो देर करेगा, उसे छोड़ देंगे। मिनिट टू मिनिट प्रोग्राम बनाया गया है।

जानवरों के बाद ये भी सजे। रंगीन कपड़ों ने इन्हें रंगीन कर दिया। पुराने कपड़े उतार उतार कर टेण्ट में डाल दिये गये थे। उनकी कीच, धूल और पसीने से बनी दुर्गंध इन लोगों से जुदा होकर मुड़ी तुड़ी पड़ी थी। रंगीन कपड़ों के अंदर पहुंच कर उनकी देह हिचकोले खाने लगी थी। अंदर के हिस्सों में कुछ दौड़ता भागता महसूस हो रहा था। पुलक फड़फड़ा फड़फड़ा कर बाहर आने को आतुर हो रही थी। ये सज कर बैठ गये थे, मगर सेना के ट्रक न आये थे। उधर परेड मैदान के दूसरे सिरे पर सेना के जवानों में भी यही कार्यवाही जारी थी, मगर वहां उतावली और हड़बोंग न थी – अनुशासन था। उन्हें वक्त का पता था। वे वक्त के साथ थे। घड़ियों में वक्त की रफ्तार सहेज ली गयी थी, इसी कारण वक्त उन्हें फेंक नहीं पाया था।

निर्धारित समय पर ट्रक आये। कुछ उधर चले गये और कुछ इधर आ गये। पुख्ता और कद्दावर ट्रकों के पिछले पल्ले खोले गये। अंदर साफ सुथरा था। जानवरों के लिये खुराक अधकटे ड्रमों में रखी गयी थी। मजबूत तख्ते लगा कर फिसलपट्टी सी तैयार की गयी फिर इन लोगों से कहा गया कि वे अपने जानवरों को ट्रक पर चढ़ा दें। जानवरों ने ट्रक देखा तो एक कदम पिछल गये। उन्हें पुरानी याद ठोकर लगा गयी, पर जब मालिकों ने उन्हें पुचकार कर आगे बढ़ाया तो वे मालिकों की इच्छा के लिये आगे को धकिल गये। तख्त पर पांव रख कर चढ़ने में उन्हें कोई परेशानी न हुई। इससे वे और मालिक दोनों खुश हुए। हाथी तक सूंढ़ को फैलाता समेटता यों ट्रक में समा गया, जैसे उसकी जानी पहचानी जगह हो।

ट्रकों के बाद लारी आ लगी। खूबसूरत रंग वाली लारी का दरवाजा खुला तो अंदर बैठने की लम्बी लम्बी सीटें दिखायी दीं। ये लोग हुलक कर यों चढ़े कि बारात में जा रहे हों। जब सेना के सभी जवान और जानवर मय साजो सामान के लारी और ट्रक में चढ़ गये, तब सारी गाड़ियां मैदान से निकल निकल कर सड़क पर आ गयीं। सबसे आगे एक खुली हुई जीप थी जिस पर सुरक्षा सैनिक और उनके अधिकारी बैठे हुए थे। जीप की हेडलाइट्स के साथ सर्चलाइट्स भी लगी हुई थीं। उनकी रोशनी आधा किलोमीटर तक की सड़क को रोशन कर रही थी। जीप के बाद काले रंग की एम्बेसडर कार थी, जो एकदम चमचमा रही थी। उसमें सेना के वही बड़े अफसर बैठे थे, जो दो दिनों से रिहर्सल इंचार्ज के तौर पर काम देख रहे थे। कार के पीछे भी दो तीन कारें थीं और उनके पीछे ट्रक तथा ट्रकों के पीछे लारियां। यों यह काफिला किसी बारात से कम न था।

काफिला जब जुलूस के आरम्भ स्थल पर पहुंचा तो भोर की किरणें कोहरे की चादर को तार तार करने में जुट चुकीं थीं। सब लारियों से उतरे, तख्तेदार फिसलपट्टी वाली सीढ़ी लगा कर जानवर उतारे गये। उतर कर इन लोगों ने जक्क बक्क होकर चारों ओर निहारा। सैनिक तो पंक्तिबद्ध होकर किनारे खड़े हो गये थे, ये मगर झुंड सा बनाये अपने जानवरों के साथ, गर्दनें इधर उधर डुलाते हुए चौड़ी सड़क, भव्य इमारतें और कोहरे की परत देख रहे थे। मंझले अफसर ने आकर कहा – खड़े मत रहो, उधर तुम लोग भी जानवरों के साथ लाइन लगा कर खड़े हो जाओ। दोनों हाथों की मुट्ठियां बांध कर उन्हें छाती के पास रखे वे कांपते होठों से जानवरों को– चल्लू...आ...हू... कहते उस तरफ चल पड़े, जहां अफसर ने जाने को कहा था।

जादुई फुर्ती से पहले चीनी मिट्टी के बड़े बड़े मग्घे आये फिर चाय वाला आया और मग्घों को भर गया। इतनी सुबह, दानेदार कोहरा और भाप उड़ाती चाय... मजा आ गया। रमजान तो मग्घे के चारों ओर अपनी दोनों हथेलियां लगा कर गर्माहट ग्रहण करने लगा। फिर उसने एक चुस्की लेकर कांपते होंठों को भी थिर करने की कोशिश की। बाकी लोग भी ठंड से लड़ ही रहे थे। जवानों को

www.tadbhav.com

मानो ठंड छू भी नहीं रही थी। वे सावधान की कड़क मुद्रा में खड़े थे और चाय पी रहे थे। सैकड़ों मग्घे किसी अदृश्य निर्देशन से एक साथ मुंह तक जाते और लगभग एक साथ वापस आ जाते और फिर एक साथ लौटते।

न जाने कहां कहां से ट्रक और लारियां चली आ रहीं थीं। किसी ट्रक से बैंड उतरता तो किसी से बिगुलों का ढेर। अनोखी अनोखी ड्रेस पहने लोग आते जा रहे थे। महावत ने रमजान को कोहनी मारी – देख टैंक चला आ रहा है...

रमजान ने युद्ध में उपयोग किये जाने वाले विशाल टैंक को देखा। उसके पीछे कई टैंक रेंगते से चले आ रहे थे। भांगड़ा नाचने वाले सिक्ख और गिद्धा नाचने वाली लड़कियां आ गयीं थीं। गुजराती, कश्मीरी, हिमाचली, मणिपुरी, गौंड़ी, पहाड़ी और न जाने किन किन प्रदेशों के नृत्यदल वहां जमा हो गये थे। फिर झांकियों का आना शुरू हुआ। लम्बे चौड़े ट्रकों पर मनमोहक झांकियां बनायी गयीं थीं।

ऊंटवाले ने बेबसी से पूछा – पण रास्टपतिजी कां हैं...? बाकी लोगों ने दूर दूर तक देखा और कहा– समझ ना आवे है।

जुलूस शुरू होते समय दिन पूरी तरह निकल आया था। जीपें सायरन बजातीं इधर से उधर भाग रहीं थीं और जुलूस व्यवस्थित कर रहीं थीं। इन लोगों को उनके लिये निर्धारित स्थान बता दिया गया था। ये लोग अपने जानवरों के साथ चिकनी, साफ और समतल सड़क के बीचोंबीच आकर खड़े हो गये थे। आसमान सफेद से नीला हुआ जा रहा था। पक्षियों के झुंड एक दिशा से दूसरी दिशा की ओर उड़े जा रहे थे, मानो वे भी किसी जुलूस में जाने के लिये भागे जा रहे हों।

रमजान ने अपनी अक्ल का इस्तेमाल करते हुए बताया – भाईजान, रास्टपतिजी इदर काये को आयेंगे... अपना जुलूसई उदर को जायेगा... समझे...

सीटियां बजीं। बिगुल बजे। ढोल और नगाड़े बजे। जुलूस ने सरकना शुरू किया। दुलदुल घोड़ी थिरकने लगी। ऊंट गर्दनें लहरा लहरा कर तैरने लगे। हाथियों ने सूंड़ ऊपर उठायी और नमस्कार किया। खिली हुई धूप में रंगबिरंगे कपड़े और चमकदार बन गये थे।

घंटे भर से ज्यादा चल लिये तब दो भव्य इमारतों का सगा जोड़ा सड़क के दोनों ओर आमने सामने डटा हुआ दिखा। महावत फुसफुसाया किसी राजा का महल होग्गा...

रमजान ने असमंजस में गर्दन हिलायी।

– इतणी चौडी सड़क्क! ऊंटवाला सनाका खा गया। यहीं हलचल थी। सड़क के दोनों तरफ हजारों कुर्सियों पर दर्शकगण विराजमान थे। क्या तो सजावट थी और क्या तो चाक चौबंद इंतजाम। लकदक करता हुआ स्थल। धूल, गंदगी, कचरा, ढोर डंगर, गंवई आदमी औरतें, किसी का भी इधर पैसारा न था। सजे धजे स्त्री पुरुष, गोरे सुंदर गदबदे शरीर। खिलखिलाते निश्चिन्त मुखड़े। वैभव जन्य शालीनता। सब ठाठें मार रहे थे। सेना और पुलिस के लोग मूर्तियां बन कर चप्पे चप्पे पर मौजूद थे।

– कित्ता बड़ा होगा जे जुलूस?

– मीलों तक पूंछ न दिखे है... मगर तू मुड़ मुड़ के तो मती देख... वो साब्ब गुस्सा होरया है।

बैठे हुए लोगों के बीच में से गुजरने में जुलूस को घंटा भर से ज्यादा वक्त लगा। रमजान ने गर्दन टेढ़ी करके, आंखें तिरछी करके देखने की बार बार कोशिश की, लेकिन उसे राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री नहीं दिखे। गर्दन और ज्यादा घुमाना मना था। चलते चलते रुक जाना मुनासिब न था। और जब रुकने का इशारा हो तो इधर उधर देखना नामुमकिन था। दिख भी जायें तो वह उन्हें पहचान नहीं सकता था। महावत, साईस और ऊंटवाले देखने को बेताब रहे, मगर रंगबिरंगी भीड़ और उनके असंख्य मुंडों के सिवाय कुछ भी दिखायी न दिया।

दस बजा होगा जब जुलूस आगे बढ़ा। महावतों और साईसों को लग रहा था कि जुलूस अब

www.tadbhav.com

खत्म हो जायेगा। घुटने चिलकने लगे थे और थकान देह पर डेरा जमा रही थी। दुलदुल घोड़ी मुड़मुड़ कर कनखियों से रमजू को देख रही थी कि आज क्या हो गया इसे, घसीटे ही लिये जा रहा है। हाथी महावतों से नाखुश हो रहे थे। उनके पैरों की गद्दियां पसर गयीं थीं। ऊंट बूढ़ों की तरह झुक झुक कर चल रहे थे।

सेना के जवानों में वही कर्रापन था। वे न तो थके थे न ढीले पड़े थे।

ठंड के बावजूद प्यास गले में चुभ रही थी। रमजान ने दुलदुल को देखा, वह भी प्यासी हो गयी होगी – सोचा। उसकी नाक फों फों कर रही थी और जबड़ों में फेन जमा हो गया था। उसने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। दुलदुल मुड़ी, आंखों से पूछा – और कित्ता चलाओगे?

रमजान के सूखे हुए चेहरे ने जवाब दिया – खुद मुझेई कहां पता है...?

– तो पानी वानी ही पिलवा दो...

– हुकुम ना है, दुलदुल

– कचूमर निकल गया, आज तो... भूख भी लग आयी...

– माफ करना दुलदुल... मैं भी भूखा प्यासा हो रहा हूं...

जाने कहां कहां से गुजरा जुलूस। धूप कड़ी होती गयी। दिन चढ़ता गया। पांव थकते गये। जीभ और तालू सूख गये। जबड़ों ने हिलना बंद कर दिया। जानवर पस्त हो गये। ऊंटों के नथुनों से आवाज निकलने लगी और हाथियों के नाखूनों के नीचे से खून झरने लगा। उनके पैर पक्की और गर्म सड़कों के लिये नहीं बने थे। उन्हें तो जंगलों की मिट्टी पर चलने के लिये कुदरत ने बख्शे थे। सेना के घोड़ों में तो अब भी दम दिख रहा था, मगर इनके घोड़े लीद करने लगे थे। दुल्लो की लीद पर दूर से ही अफसर ने आंखें तरेरीं। अब रमजान क्या करे? दुल्लो तो देसी घोड़ी थी। वह कोई काठियावाड़ी, मारवाड़ी, भूटिया, मणिपुरी या स्पीती नस्ल की न थी और न उसे इतना चलने की आदत थी। उसका पेट खाली हो गया था। घोड़ों के पेट में एक ही कक्ष होता है, जबकि जुगाली करने वाले जानवरों के पेट में चार कक्ष होते हैं। घोड़े इसी कारण थोड़ा थोड़ा कई बार खाते हैं, और जल्दी भुखा जाते हैं। ऊंटों की भी यही दशा थी। वे रेत में चलने वाले पांवों को लेकर दुनिया में आये थे, मगर उन्हें सड़कों पर चलना पड़ रहा था। अब तक लगभग बीस किलोमीटर वे चल ही चुके थे। भूख, प्यास तो उन्हें न लगी थी, मगर पांव लड़खड़ाने लगे थे। फिर भी वे धीरज बांधे हुए थे।

हाथी घायल पैरों से जितना दुखी थे, उससे कई गुना ज्यादा वे शोरशराबे से परेशान थे। कोलाहल हाथी को जरा भी पसंद नहीं होता। बैंडबाजों से कान फटे जा रहे थे, वे जुलूस को रौंद कर निकल भागना चाहते थे, महावतों के लिहाज में व्याकुलता को पीने पर मजबूर भी थे।

जुलूस अब शीशगंज गुरुद्वारे पहुंचा और वहां से लालकिले के बुर्ज नजर आने लगे तो दोपहर के दो बज रहे थे।

महावत किलका – किला... देख्ख किला...

– हां है तो... लाल रंग का है... लालकिला होग्गा...

रमजान ने लालकिले को देख कर छाती में गर्व महसूस किया। उसके पूर्वजों ने यहां से कभी हुकूमत चलायी थी। पूरे हिन्दुस्तान पर उनका राज था। लोग गर्दन झुका कर कोर्निश बजाया करते थे। 'मुगले आजम' फिल्म में उसने देखा है सब्ब। वाह क्या तो अकबर बादशाह थे और क्या तो उनका महल।

अफसर ने आकर डांटा – ठीक से चल... अभी जुलूस में है तू...

रमजान अकबर बादशाह की बजाय अफसर के बारे में सोचने लगा। अफसर ने पहली बार 'तू तड़ाक' में बात की थी।

चांदनी चौक से देखने पर लालकिला सीधे सिर पर खड़ा दिखायी दे रहा था। चारों ओर भीड़

www.tadbhav.com

ही भीड़। यहां वे सजे धजे खूबसूरत जिस्म वाले लोग न थे। अपनेई लोग थे। सूखे पिचके चेहरे, गंदे मैले कपड़े, कहीं से भी घुसने और निकलने को बेताब पांव और हैरत से देखने वाली धंसी धंसी आंखें।

हाथी ने महावत को इशारे किये, मगर वह नहीं समझा। हाथी को अखर गया, वह महावत के छोटे से छोटे इशारे को समझने में कभी कोताही नहीं करता, पर महावत को इसकी जरा सी भी फिक्र नहीं।

हाथीं ने सूंड़ बढ़ा कर उसकी बांह पकड़ी और सड़क के किनारे की ओर खींचने की कोशिश की। महावत ने समझ कर भी नासमझ बनने का ढोंग किया और सूंड़ पर थपकियां देकर बिना पीछे मुड़े ही आगे की ओर घिसटता रहा।

हाथी ने दो चार बार और कोशिशें कीं, मगर नाकाम। तब उसने दुल्लो की ओर रुख किया। उसकी पीठ सूंड़ से सहलायी।

दुल्लों की आंखों से आंसू ढुलक गये। आज रमजू भी तो बेगाना हो गया था। उसके प्राण हलक में आ रहे हैं, मगर रमजू बेखबर है। उसके पैर टूटे जा रहे हैं, मगर रमजू कठकरेज हो गया है।

दुल्लो ने सिर उठा कर हाथी को देखा। नजरें मिलीं। मालिकों की बेरुखी ने दोनों के दिलों को चीर कर रख दिया।

हाथी की आंखों ने कुछ कहा।

दुल्लो की आंखों ने उसे समझा।

दोनों ने सुस्त चाल को और सुस्त बनाया और थोड़ा सा पिछड़ गये। फिर थोड़ा और पिछड़े। अब तक जैन मंदिर आ गया था।

हाथी जैन मंदिर के पास पहुंच कर बौरा गया। उसने गुस्से और बेअदबी में पहले अपनी गर्दन जोर से हिलायी फिर ऐसे चिंग्घाड़ा कि इलाका गूंज गया। फिर माथा ऊपर नीचे उठाया गिराया और महावत को धक्का मार कर जुलूस के अनुशासन को भंग करता हुआ बायीं ओर तेज तेज चल दिया। महावत ने भी अनुशासन तोड़ा और उसके पीछे भागा– अरे... अरे कहां चला... रुकजा गज्जू. .. रुकजा... कहां जा रहा है...? मुसीबत आन पड़ेगी भैय्या ऐसे मत जा... लौट चल रे गजुआ...! मरवायगा क्या आज तू...?

हाथी ने अनसुना कर दिया। उसके पैरों से रुधिर की धार सड़क पर बह चली।

उसके पीछे पीछे दुल्लो भी भागी। आंख और नाक से पानी सा गिराती, लंगड़ाती और बदहोश सी। रमजान ने पलट कर देखा तो उसका दिल धड़ धड़ करता हिचकोले खाने लगा।

वह चिल्लाया– दुल्लो... ओ दुल्लो... कहां जा रही है दुल्लो... अपने रमजू को छोड़ कर न जा ऐसा न कर दुल्लो... इज्जत पर बट्टा लग जायेगा... सरकार खफा हो जायेगी री दुल्लो... ओ दुल्लो... जेहल हो जायेगी री।

दोनों ने मालिकों को अनसुना कर दिया। वे भीड़ को त्याग कर लालकिले के सामने वाले मैदान की तरफ भागे जा रहे थे। आगे आगे हाथी और पीछे पीछे दुल्लो। उन्हें बेतहाशा भागता देख कर भीड़ भी डर कर इधर उधर रेलमपेल मचाये हुई थी। गणतंत्र दिवस की ड्यूटी पर तैनात पुलिस वालों ने देखा तो दुर्घटना के मद्देनजर वे भी हाथी और दुल्लो के पीछे दौड़े। पुलिस वालों के जूतों की धमक से घबरा कर हाथी और तेज दौड़ा। दुल्लो ने भी मरियल चाल को दुरुस्त करने की कोशिश की और एक पैर फिसला बैठी। पर तुरंत ही उठी और फिर दौड़ने लगी।

पुलिस वालों के हाथों के डंडे हवा में लहराये। एक गुस्से मे चीखा – क्यों रे... पागल हो गये क्या तेरे हाथी घोड़े...? गोली मार दी जायेगी अभी...

– नईं साब जी... पागल नईं, गुस्सा हो गया है... हल्ला गुल्ला सहन नहीं करता न्... इसलिये. .. और थक भी गया न्...।

www.tadbhav.com

— और घोड़ी...?

— वो भी डर गयी है बेचारी... साब जी... आप चिन्ता मत करो... हम उन्हें संभाल लेंगे जी... संभाल लेंगे।

हाथी और दुल्लो ने सड़क पार की। भीड़ उनके डर से तितर बितर हुई। मगर वे अपनी राह भागते रहे और लालकिले के मैदान में पहुंच कर ढह गये। हाथी पहले फसक्का मार कर बैठा और गर्दन जमीन पर लुड़का दी। दुल्लो भी पीछे पीछे आकर लद्द से, पास में ही गिर पड़ी। महावत और रमजान भागे भागे आये और हांफते हुए, पीछे दौड़ते आ रहे पुलिस वालों की राह रोक कर हाथ जोड़ कर खड़े हो गये।

— माफी दे दो थानेदार जी... अब हम उन्हें संभाल लेंगे... आप तो नाहक परेशान हो गये जी... भगवान... आपका भला करे...

रमजान ने भी निहोरा किया — खुदा आपके बच्चों को सलामत रखे निस्पिट्टर साब जी...

महावत हाथी से लिपट गया — गज्जू... का हो गया तेरे को रे आज बेटा... तू तो ऐसा न था...

पुलिस वालों ने देखा कि जानवर बैठ गये हैं और अब खतरा नहीं है, तो दुर्घटना टल जाने की आशा से वे आपे में लौटे— संभाल के रखो बे अपने जानवरों को नईं तो गोल्ली मार दी जायेगी... समझा...?

वे धमका कर लौट गये।

रमजान ने दुल्लो की नाक से खून बहता देखा — अरे तेरी नाक से खून काये को बह रहा है री दुल्लो... थक गयी न्... मेरे पांव भी देख... फफोले आ गये होंगे जूतों के भीतर... पर का करता री दुल्लो... सरकार ने बुलाया था न्... हुकम न मानता तो जेहल हो जाती... तुझे भी मुझे भी... हाय हाय क्या हाल हो गया रे तेरा...?

दुल्लो आंखें मूंदे लम्बी सांसें भरती रही।

उधर महावत हाथी से रिरिया रहा था। मुझे माफ कर दे गज्जू... सब गल्ती मेरिच है रे... मैंनेईं तुझे मुसीबत में डाला... मैंईं तुझे बचपन में जंगल से उठा के लाया... मैंइने तुझे मां बाप से जुदा किया...

हाथी ने आंखें दूसरी तरफ फेर लीं।

रमजान ने अपने अंगौंछे से दुल्लो का मुंह पोंछा। हाथ फेरा थपकी दी। भाग कर अंगौंछा गीला कर लाया और दुल्लो के मुंह में निचोड़ कर पानी पिलाया। दूसरी बार हाथी के मुंह में पानी डाला। महावत और रमजान हाथी और दुल्लो को बारी बारी से देखते संभालते रहे।

आधा पौन घंटे बाद जानवरों को थोड़ा चैन मिला। महावत हाथी की गर्दन से चिपटा रहा और रमजान दुल्लो के पेट से।

रमजान ने रोते रोते कहा — हम यहां से अपने गवालियर चले जायेंगे दुल्लो... गवालियर भी कायेको... उधर चले जायेंगे... जहां कोई सरकार न हो...।

महावत भी रो रहा था। उसने हाथी के पैरों से बह रहे खून को कागज पत्तर से पोंछा और अपनी पगड़ी फाड़ कर चारों पैरों में पट्टी बांध दी — आना पड़ा गज्जू का करते... पुलिस वाले पकड़ के ले आये... उनकी आजादी का जशन था न्...

खामोशी का पर्दा फाड़ कर एक अचीन्ही आवाज आयी — और हमारी आजादी...?

महावत सन्न् रह गया। वह जक्क बक्क होकर कभी हाथी को तो कभी दुल्लो को और कभी रमजान को देखने लगा। ऐसी आवाज पहले कभी न सुनी थी। कौन बोला...? आवाज किधर से आयी...? वहां और तो कोई था नहीं, फिर...?

क्या आप बता सकते हैं, ये आवाज कहां से आयी होगी...?

www.tadbhav.com